

प्र. क्र.

1 (A) → ① स्थापना - 1875 में सुरेन्द्रनाथ बनर्जी एवं आनंद मोहन बोस द्वारा

- ② कांग्रेस की पूर्वगामी संस्था
 ③ उद्देश्य - संयुक्त भारत की अवधारणा पर जनमत तैयार करना

- (B) ① प्रथम गवर्नर जनरल विलियम बैंटिक के बाद गवर्नर जनरल।
 ② कार्यकाल - 1835-36
 ③ समाचार पत्रों पर लगे प्रतिबंधों की हटाने के कारण प्रेस का मुक्तिदाता।

- (C) महादेव देसाई भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष के प्रमुख सेनानी व राष्ट्रवादी लेखक रहे हैं। ये महात्मा गांधी के निजी सचिव भी रहे।
 प्रमुख पुस्तक: The Story of Bardoli

- (D) → डाल्फाँसो डी अल्बुकर्क के बाद आया पुर्तगाली गवर्नर
 → कोचीन से राजधानी स्थानांतरित करके गोवा को बनाया
 → इसने पुर्तगाली कंपनी का विस्तार पूर्वी क्षेत्र जैसे हुगली, मद्रास में किया।

(E)

(F) → अलाउद्दीन खिलजी के शासनकाल में गुलाम जनरल एवं कमांडर रहे मलिक काफूर को गुजरात अभियान के दौरान प्राप्त किया गया। इसने दक्षिण के अभियानों जैसे - देवगिरि, होयसल, वारंगल आदि में सेना का नेतृत्व संभाला।

(G) → बाबर व अफगानों के मध्य लड़ा गया।

→ नेतृत्व → मुगल - बाबर → विजयी
→ अफगान - महमूद लोदी

→ समय - 1529 ई.

(H) प्रथम विश्वयुद्ध के बाद 1920 में अस्तित्व में आयी नाजी पार्टी जर्मन की प्रमुख राजनीतिक पार्टी थी। इसका नेतृत्व हिटलर ने संभाला। इसके सिद्धांत उग्रराष्ट्रवाद, नस्लवाद एवं साम्यवाद विरोधी आदि थे।

(I) → समय - 1565 ई.

→ तालीकोटा का युद्ध → मध्य

- रामराय (विजयनगर साम्राज्य)
- हसन के 5 मुस्लिम सुल्तान (बीजापुर, बीदर, बरार, अहमदनगर, गोलकुंडा)

→ विजयनगर पराजित हुआ

(J) जैन - उल - आब्दीन कश्मीर के महान शासकों में आने जाते हैं।
कार्य - बाजार नियंत्रण नीति एवं उद्योगों की बढ़ाना

- धार्मिक सहिष्णुता को प्रोत्साहन
- प्रशासनिक व आर्थिक सुधार

(K) → चंदेल शासक ~~का~~ परिमल (परमधीरेव) के राजदरबार में प्रमुख वीर योद्धा।

→ जमानिक द्वारा इनके सम्बन्ध में आल्हाखंड की रचना की गयी है।

→ सम्बंधित स्थान - महोबा

(L) गुर्जर प्रतिहार शासक राज्यपाल के समय 1018 में महमूद गजनवी ने भारत पर आक्रमण किया।

(M)

सूर्यसेन → प्रमुख क्रांतिकारी ~~का~~
 → बंगाल में

→ 1930 के सविनय अवज्ञा आंदोलन के समय चरगाँव शस्त्रागार पर नियंत्रण किया।

(N) यह इंग्लैंड की स्वतंत्रता आंदोलन के पश्चात् स्वीकार किया गया सर्वेधानिक कानून धोर्जिले के तहत प्रमुख सिविल अधिकारों को मान्यता दी गयी एवं संसद की सर्वोच्चता को स्वीकार किया गया।

(O)

२ (B)

१ अगस्त 1942 को महात्मा गांधी के नेतृत्व में प्रारंभ किया गया भारत छोड़ो आंदोलन भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष की प्रमुख घटना है, जिसमें 'करो या मरो' की भावना के साथ सत्याग्रह, बहिष्कार, जुलूस, धरना, निष्क्रिय प्रतिरोध आदि के माध्यम से अंग्रेजी शासन को व्यापक चुनौती दी गयी।

इसके महत्व को निम्न लिखित बिंदुओं के माध्यम से समझा जा सकता है!

- 1) इसमें अनेक समानांतर सरकारें गठित की गयीं, (जैसे सतीश दावत के द्वारा मिरनापुर में, सतारा में मानापादित द्वारा) जिनसे जनता में आत्मविश्वास बढ़ा।
- 2) जनता ने अपना नेतृत्व स्वयं संभाला जो परिपक्व आंदोलन की दशाता है।
- 3) 1857 के पहली बार सर्वव्यापक विस्तार के साथ व्यापक जनभागीदारी रही, जिससे विश्व जनमत भारतीय आजादी के पक्ष में आया।
- 4) ब्रिटिश शासन को यह समझ जा गया कि ताकत के माध्यम से भारत पर सत्ता नहीं चलायी जा सकती।

अतः ही इस आंदोलन का दमन कर दिया गया है लेकिन भारतीय स्वतंत्रता की दिशा में इसने प्रमुख भूमिका निभायी। यही नहीं चीन, अफ्रीका

जैसे देश भारतीय स्वतंत्रता के समर्थक बन गए।

2(c) →

भारतीय स्वतंत्रता का प्रथम संघर्ष मानी जाने वाली 1857 की क्रांति अनेक प्रशासनिक - राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक कारणों का परिणाम थी जिनमें प्रमुख व तात्कालिक कारण सैन्य परिस्थितियाँ थीं। इसे निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से समझा जा सकता है :

- 1) - भारतीय सैनिकों के साथ होने वाला भेदभाव व अपमान।
- 2) उच्च पदों पर भारतीयों की नियुक्ति नहीं।
- 3) वेतन भत्ते व सुविधाओं में भेदभाव
- 4) धार्मिक आस्थाओं पर चोट जैसे - धार्मिक चिह्न (तिलक, चौकी, जनेऊ, पगड़ी) आदि पर प्रतिबंध
- 5) समुद्र पार युद्ध के लिए भेजना जिससे धार्मिक रूप से गलत माना जाता था।
- 6) भारतीय आम जनमानस का शोषण का प्रभाव - श्री सैनिकों में अंतर्लोष का कारण था।
- 7) तात्कालिक कारण - ब्रिटिश कंपनी द्वारा चर्बी वाले कारतूस प्रयोग वाली रायफल जिनमें गाय व सुअर की चर्बी के कारतूस प्रयुक्त होते थे। इससे सैनिकों की धार्मिक आस्थाओं

पर चौर पहुँची।

उपरोक्त कारणों के सम्मिलित प्रभाव से उत्पन्न असंतोष का परिणाम 1857 की क्रांति में परिलक्षित हुआ जबकि जो बैरकपुर छावनी (अंगनपोड) से प्रारंभ हुकट क्रांति बन गया।

२ →

मौर्य वंश का संस्थापक चन्द्रगुप्त मौर्य ने अपने गुरु व प्रधान कौटिल्य की सहायता से मौर्य वंश को समाप्त करके मौर्य वंश की नींव डाली। 321 ई. में राजभार संभालते हुये अपने अनेक राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, व प्रशासनिक कार्य किए :

- (1) राजनीतिक उपलब्धियाँ
 - विशाल मगध साम्राज्य की स्थापना
 - ईरान से लेकर बंगाल तक साम्राज्य विस्तार
 - एकीकृत शासन
- (2) आर्थिक सुधार
 - सिन्धई व्यवस्था का विकास
 - पुष्यभूति द्वारा सुदर्शन झील का निर्माण
 - कृषि, उद्योग व व्यापार को प्रोत्साहन
 - कर प्रणाली में सुधार
 - मुद्रा व्यवस्था का विकास

- (3) प्रशासनिक सुधार
- केंद्रीय, प्रांतीय एवं ग्राम व नगर स्तर पर प्रथम प्रशासनिक व्यवस्था का निर्माण
 - सर्वोच्च अधिकारी व विभागों के अध्यक्षों की नियुक्ति
 - सत्ता का विकेंद्रीकरण
 - व्यवस्थित कर प्रणाली व शुल्क प्रणाली का विकास

- (4) सामाजिक
- प्रशासन में महिलाओं की भूमिका (अंगरक्षिका की नियुक्ति)
 - महिलाओं की शिक्षा अधिकार के प्रयास
 - विधवा विवाह को अनुमति
 - प्राकृतिक आपदाओं के समय राहत व्यवस्था (जानकारी - सौहार्दा व महास्थान अभिलेख से)

वस्तुतः मौर्य शासक चंद्रगुप्त ने देवीय पद का दावा नहीं किया बल्कि प्रजा के हित को प्रमुखता देते हुये कल्याणकारी राज्य की स्थापना की। साथ ही कोटिल्य की मदद से किए गए राजनीतिक-प्रशासनिक सुधार कालांतर में आधारभूत सिद्ध हुए।

2(E) → - भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष के इतिहास में 1824 में लड़ा गया कुंवर चैन सिंह का विद्रोह उल्लेखनीय है।

वस्तुतः नरसिंहगढ़ रियासत के राजकुमार चैनसिंह ने आनंदपाल एवं रामपाल को गददारी के दंडस्वरूप मृत्यु दंड दे दिया, जिससे ब्रिटिश कंपनी शासन को चुनौती मिली।

फलतः सीहोर के ब्रिटिश पोलिटिकल एजेंट मेडाक ने चैनसिंह के समस्त अंग्रेजी शासन की अधीनता जैसी अपमानजनक शर्तें रखीं जिसका मुखर विरोध कुंवर चैनसिंह ने किया।

चैनसिंह ने अपमान सहने की अपेक्षा संघर्ष उचित समझा और 1824 में सीहोर के तहसील चौराहे पर मेडाक व कुंवर चैनसिंह की सेनाओं के मध्य युद्ध हुआ।

इसमें कुंवर चैनसिंह, छिम्मतवां व बहादुर खाँ एवं उनके सहयोगी सैनिक वीरता पूर्वक शहीद हो गये। इनकी छतरी व कब्रें आज भी वीरता का गुणगान करती हैं, जिसमें अधीनता और अपमान की जगह आजादी और स्वाभिमान को प्रस्तुत दिया गया।

२(ब) झंडा किसी भी देश की सम्प्रभुता, अखंडता और गौरव का प्रतीक होता है। झंडा सत्याग्रह इसी गौरव की भावना को दर्शाने वाली प्रसंग है।

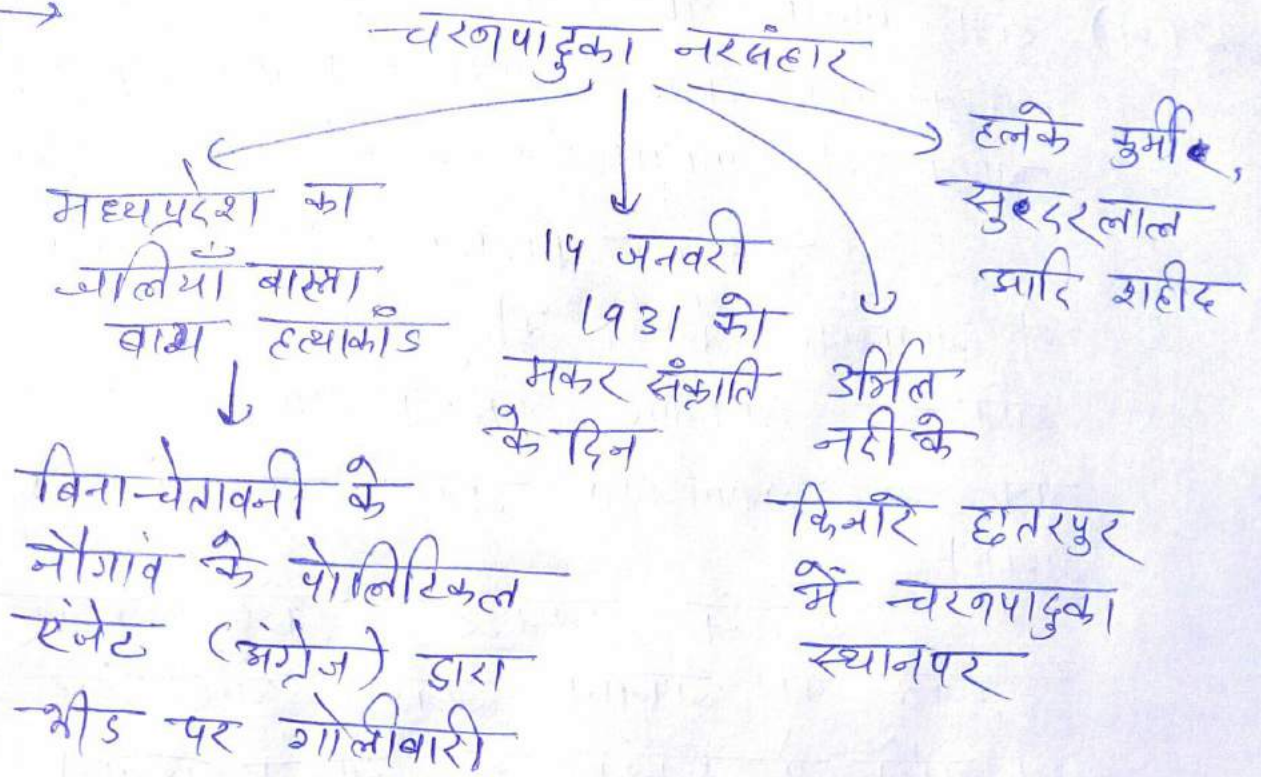
हरशकल कांग्रेस की असहयोग आंदोलन की मानसिक तैयारी की वॉच समिति के जबलपुर आने पर जबलपुर कांग्रेस समिति द्वारा अभिनंदन पत्र व नगरपालिका भवन पर झंडा फहराया गया।

इसै जबलपुर के डिप्टी कमिश्नर ने अंग्रेजी हुकूमत का अपमान समझा और इंडे को डारैने व पेंरो से बुचलने का आदेश दिया।

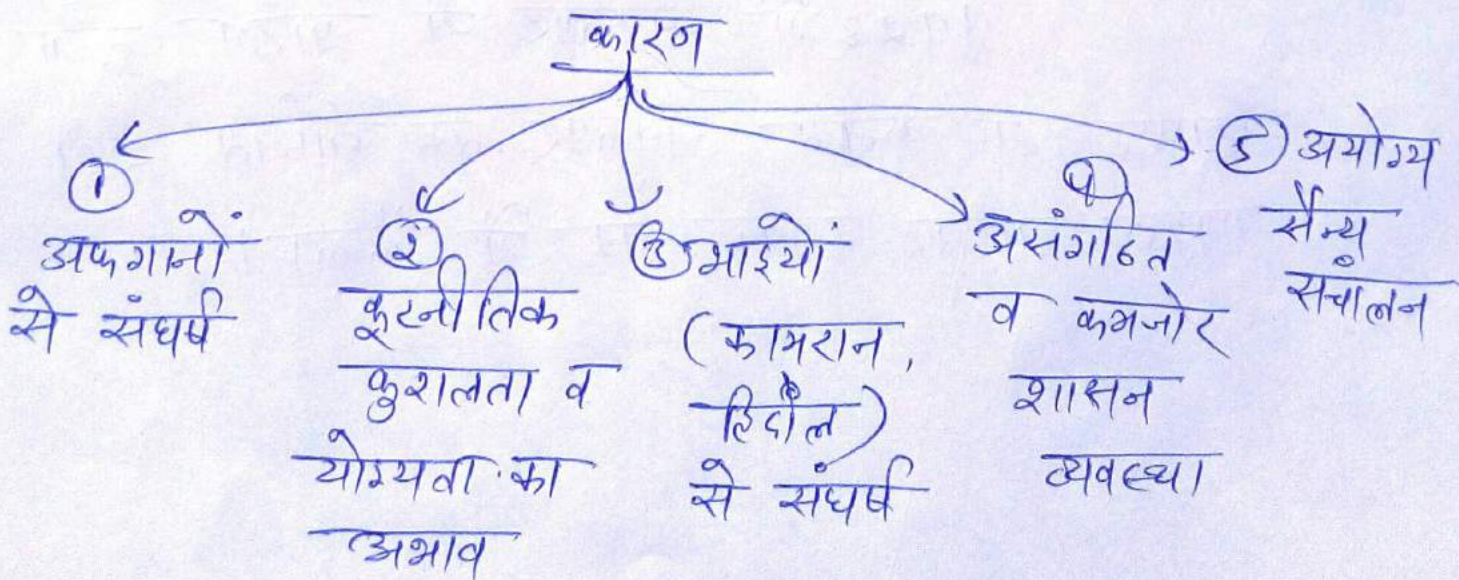
इसी क्रम में 1923 ई. में झंडा सत्याग्रह शुरू हुआ जिसमें ~~सुरेन्द्र~~ पं. सुरलाल, सुभद्रा कुमारी, प्रेमचंद आदि नेतृत्वकर्ता शामिल रहे। पं. सुरलाल पर आर्थिक मुकदमा चला और 6 माह का कारावास हुआ।

1923 में जबलपुर से प्रारंभ हुआ यह सत्याग्रह न केवल जबलपुर तक सीमित रहा बल्कि नागपुर सहित व्यापक क्षेत्र में फैला।

१ (म) →



२ (न) → बाबर के पश्चात् मुगल शासन का दूसरा शासक हुमायूँ की एक अयोग्य व कमजोर शासन प्राप्त हुआ। इससे हुमायूँ के साम्राज्य की अनेक चुनौतियाँ सामने आयीं जो इसकी असफलता का कारण बनीं।



उपरोक्त कारण इन्हीं की अक्षमता के कारण बने और अंततः चौथा के युद्ध के साथ शेरशाह सूरी का शासन स्थापित हुआ।

१(K) → सातवाहन शासक गौजमीपुत्र शातकर्णी एक योग्य व महान शासक माना जाता है, जिसे अहितीय ब्राह्मण, शत्रियदर्पमान भट्टन, द्वितीय परशुराम कहा जाता है। इसके साम्राज्य की उपलब्धियाँ निम्नलिखित हैं :-

- ① उत्तर से लेकर दक्षिण तक साम्राज्य विस्तार। (विजयराज)
- ② जनता के कल्याण पर बल। इसे प्रजा के सुख में सुखी व प्रजा के दुख में दुखी शासक माना जाता है।
- ③ धार्मिक सहिष्णुता पर बल।
- ④ बौद्ध विहारों को दान आदि।

२(L) 1789 की फ्रांस की क्रांति में अनेक सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक परिस्थितियाँ कारण बनीं किंतु सर्वप्रमुख योगदान दार्शनिकों व बुद्धजीवियों का रहा जिन्होंने फ्रांसीसी समाज की समस्याओं का आइना सामने रखा।

रूसो ने प्रकृति पर बल देते हुये कहा कि "मनुष्य स्वतंत्र पैदा हुआ है"। साथ ही

रूसो ने समानता पर बल देते हुए कहा कि
"प्रकृति पर सभी का समान अधिकार है।"

वहीं वॉल्टेयर ने शक्ति के पृथक्करण
की व्याख्या करते हुए मानवाधिकारों की बात की।
मॉरेस्को ने भी जनता के शोषण व चर्च व्यवस्था
की तर्कपूर्ण ढंग से आलोचना की जिससे फ्रांसीसी
क्रांति को प्रेरणा मिली।

निष्कर्षतः कह सकते हैं कि फ्रांसीसी
क्रांति का मूल फ्रांस की शोषक परिस्थितियाँ
(चर्च व्यवस्था, देवीय शासन, वर्ग शोषण) थीं किंतु
इन्हें उजागर करके दार्शनिकों ने क्रांति को प्रेरित
किया।

3(A) → 1914 में प्रारंभ हुआ प्रथम विश्व युद्ध विश्व
इतिहास की एक सर्वप्रमुख घटना है, जिसके लिए
अनेक कारण जैसे- औपनिवेशिक व साम्राज्यवादी
प्रतिस्पर्धा, सैन्यीकरण, गुटीय राजनीति आदि;
जिम्मेदार रहे।

① साम्राज्यवादी प्रतिस्पर्धा: यूरोप में औद्योगिक क्रांति
के बाद शुरू हुई
साम्राज्यवादी एवं औपनिवेशिक लाभ की प्रतिस्पर्धा
ने यूरोपीय देशों जैसे- इंग्लैंड, फ्रांस, रूस व
नवोदित देश- आस्ट्रिया, इटली, जर्मनी आदि में

आपसी तनाव को बढ़ाया।

② द्वितीयक संधि प्रणाली : सैदान के युद्ध के बाद जहाँ जर्मनी फ्रांस को अलग-थलग करना चाहता था जिससे एल्सेस-लॉरेन पर जर्मनी का अधिकार बना रहे। वहीं बोल्शिया - हर्जगोविना की लैबर आस्ट्रिया-सर्बिया सर्वधर्म संबंध बढ़ा। इससे देशों में गुप्त संधियाँ हुईं और विभिन्न त्रिगुट निर्मित हुईं जिससे मुरीय राजनीति शुरू हुई।

③ सैन्यीकरण → यूरोपीय देशों ने अनिवार्य सैनिक सेवा लागू कर शस्त्रीकरण को बढ़ावा दिया जिससे आपसी तनाव युद्ध में बदल गया।

④ उग्रराष्ट्रवाद → एल्सेस-लॉरेन एक तरफ जर्मनी की संप्रभुता का मुद्दा बना, वहीं फ्रांस द्वारा इसे पाना उसके सम्मान का प्रश्न बना। इससे दोनों के मध्य उग्रराष्ट्रवाद का जन्म हुआ। वहीं सर्बिया - आस्ट्रिया के बीच अन्य यूरोपीय ताकतों के समर्थन के चलते उग्रराष्ट्रवाद युद्ध में बदल गया।

⑤ अंतर्राष्ट्रीय संस्था का अभाव → यह युद्ध का प्रमुख कारण बना। वस्तुतः सभी देश स्वयं को असीमित व सर्वोच्च शक्तिशाली

समझ रहे थे। इनमें आपसी समन्वय, नियंत्रण व शांति व्यवस्था को बनाए रखने के लिए किसी एक अंतर्राष्ट्रीय संस्था की कमी थी जो इनके नियंत्रित कर सके।

6) तात्कालिक कारण - बाल्खिया - हर्बेगोविना, जिसमें सर्ब आदि की संख्या अधिक थी किंतु इस पर नियंत्रण आस्ट्रिया का था। अतः सर्बिया बाल्खिया पर अपना दावा करता था। ऐसे में बाल्खिया धूमने आये आस्ट्रिया के राजकुमार की हत्या सर्ब युवक ने कर दी जिससे सर्बिया और आस्ट्रिया के मध्य 1914 में युद्ध हो गया जो आगे चलकर विश्व युद्ध में बदल गया।

वस्तुतः प्रथम विश्व युद्ध में सर्बिया और आस्ट्रिया तो दो छोड़े थे किंतु छुड़सवार तो कोई और थे जिससे दो देशों का युद्ध प्रथम विश्व युद्ध में बदल गया जिसमें एक ओर इंग्लैंड, फ्रांस, रूस तो दूसरी ओर आस्ट्रिया, जर्मनी, इटली, तुर्की आदि थे। यह युद्ध 1918 में पेरिस सम्मेलन में अपने नुकसानों का मूल्यांकन करता है।

3CB) → भारतीय इतिहास की प्रथम नगरीकृत सभ्यता
सिंधु घाटी सभ्यता (1750 ई. पू. - 2350 ई. पू.)
अपने समकालीन सभ्यताओं में समृद्ध थी जिसके
पतन के सम्बंध में अलग-अलग विद्वानों के
अनेक मत हैं।

① आर्य आक्रमण व बाह्य कारक - गार्डनर-वाल्ड
व अन्य

② बाढ़ - जॉन मार्शल

③ जलवायु परिवर्तन व पारिस्थिति बदलाव

④ प्राकृतिक आपदाएँ जैसे - भूकंप, महाभारी आदि

इस सभ्यता के पतन के सम्बंध में
आर्य आक्रमण का सिद्धांत ज्यादा तार्किक नहीं है
क्योंकि आर्यों का आगमन 1500 ई. पू. माना जाता
है, वहीं पतन 1750 ई. पू.।

इसके पतन का सर्वप्रमुख कारण जलवायु
परिवर्तन, व पारिस्थितिकीय असंतुलन माना जाता है।
दरअसल सिंधु निवासियों ने विकास के क्रम में
पारिस्थितिकीय असंतुलन को बढ़ावा दिया जिससे
बाढ़-सूखा जैसी समस्याएँ सामने आईं और
सिंधु सभ्यता अपने शीर्ष - नगरीय स्वरूप
से ~~दूर~~ ग्रामीण चरण में चली गयी।

इसके अवशेषों पर अनेक स्थानीय
संस्कृतियों का विकास हुआ।

3 (D) → राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने दक्षिण अफ्रीका में अपने प्रवास के दौरान व भारतीय राष्ट्रीय संघर्ष के समय अपने आंदोलनों व जैसे - चंपारण, खेड़ा सत्याग्रह, असहयोग आंदोलन (1920), सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930) व भारत छोड़ो आंदोलन (1942) में जिस रणनीति व कार्यपद्धति को अपनाया इसे निम्नलिखित विषयों के माध्यम से समझा जा सक्ता है -

① सत्याग्रह → इससे आशय भौतिक शक्ति को नैतिक शक्ति के माध्यम से पराजित करना है। वस्तुतः गांधी जी सत्य, अहिंसा के माध्यम से अंग्रेजी शासन को पराजित करने का माध्यम सत्याग्रह अपनाते थे।

② संघर्ष - विराम - संघर्ष की नीति → महात्मा गांधी के अनुसार संघर्ष करके अपनी मांगों को मनवाना चाहिए और फिर बाकी शेष मांगों पुनः संघर्ष करके। इसे दबाव - लयशीलता - दबाव नीति भी कहते हैं।

③ आंदोलन के सक्रिय - निष्क्रिय दौर में विश्वास → वस्तुतः जनता के दमन सहमे की भूमता असमीरित नहीं होती अतः जनता की निराशा से बचने के लिए आंदोलन को दमन से पहले वापस लेना चाहिए। एवं निष्क्रिय दौर में स्पनात्मक कार्य

जैसे - चरखा चलाना, रोज़े उन्मूलन आदि करने चाहिए।

④ साधन-साध्य की पवित्रता → गांधी नियंत्रित जनआंदोलन पर बल देते थे और इसके लिए अहिंसक साधन की पवित्रता की बढ़ावा देते थे क्योंकि अहिंसक आंदोलन में जनभागीदारी कम होती है, वहीं सरकार को दमन करने का भौका मिलता है।

⑤ साधारण जीवनशैली एवं स्वनात्मक कार्य → यह गांधी जी की प्रमुख कार्यपद्धति थी। वे साधारण पहनावे व परिवहन का प्रयोग करते थे जिससे जनता उन्हें अपना वास्तविक प्रतिनिधि मानती थी। वहीं स्वनात्मक कार्य जैसे - स्वदशी पर बल, चरखा चलाना, रोज़े प्रथा उन्मूलन, अछूतों द्वार, वर्गसमन्वय आदि कार्य जनता में ऊर्जा के संचार के लिए करते थे।

निलक्षितः उपरोक्त कार्यपद्धति के चलते भारतीय जनमानस ने स्वाभाविक व सहज रूप से आपता नेहरू महात्मा गांधी की साँप दिया और और उनके आंदोलनों में 1917 से लेकर 1942 तक लगातार जनभागीदारी बढ़ती गयी।